प्रकाशक का वक्तव्य

श्री अलख-साहिबा ट्रस्ट (रजि०) का इतिहास :

विक्रमाब्दि १९९० (ईस्वी १९३४) दुर्गा अष्टमी को श्री अलख-साहिबा ट्रस्ट अस्तित्त्व में आया। यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि ट्रस्ट किन परिस्थितियों के कारण बनाया गया। श्री अलख-ऐश्वर्य (जगत माता भवानी) के निर्वाण के उपलक्ष में दो वार्षिक श्राद्ध सम्पन्न होते हैं। एक माघ कृष्ण-पक्ष सप्तमी को देंदमर (दिद्दामठ) नवाकदल, श्रीनगर में दूसरा कन्यार्कगत[1] के पितृपक्ष, अश्विन कृष्ण सप्तमी को वासुकि कुण्ड (वासकूरा, सुम्बल तहसील, गान्धरबल (कश्मीर) में। बिरादरी द्वारा प्रस्तावित व्यक्ति इस यज्ञ को यथेच्छा अपनी बिरादरी में सम्पन्न करता था और इस यज्ञ को करने वाले प्रस्तावित व्यक्ति को यज्ञ आदि के खर्चे की पूर्ति के लिए यज्ञ में चढ़ाई गई नकदी दी जाती थी, जिसको "ज़रि नियाज़" कहते थे। यज्ञ आदि के खर्चे के उपरान्त बचे हुए रुपये को भवानी की तपस्या से सम्बन्धित 'अस्थापनों'[2] के सुधार एवं उनकी मरम्मत के निमित्त व्यय किया जाता था। विक्रमाब्दि (१९८०) में बिरादरी ने धनाभाव से विवश होकर जनता से चन्दा जमा किया और "वासुकि कुण्ड" (वासकूरा) में एक धर्मशाला का निर्माण करके जनता की आवश्यकताओं को पूरा किया। वासकूरा में प्राचीन धर्मशाला थी, जिसमें कन्यार्कगत (पितृ-पक्ष) का श्राद्ध किया जाता था किन्तु वह आग से जल गई थी। बिरादरी के सामने इसके निर्माण की समस्या थी, जिससे श्राद्ध का अनुष्ठान यथावत् हुआ करे। अतः इस पुनीत कार्य के लिए यथा-योग्य जगह या मकान का होना अनिवार्य बन गया था। यही कारण था कि बिरादरी ने धर्मशाला बनाने का प्रण किया। श्रद्धालुओं और इस कार्य से सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों ने एक सभा के गठन का निर्णय लिया और "श्री अलख साहिबा ट्रस्ट" का अस्तित्व निम्नलिखित उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों के लिए सामने आया :—

१. यज्ञ रचाने और "ज़रि नियाज़" (चढ़ावा) प्राप्त करने तथा उसका उचित प्रयोग करने के लिए।

---

१. हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोग जिसे 'कनागत' कहते हैं।—**सम्पादक**

२. पवित्र स्थल, मन्दिर या तीर्थ।—**सम्पादक**

CC-0 S.P. Dhar Collection. Digitized by eGangotri

२. अस्थापन आदि की देख-रेख एवं उनका सुधार करने के लिए।

३. हिन्दू जनता को संगठित करने और उसमें प्रेम-भाव बढ़ाने के लिए।

४. अस्थापनों में धार्मिक और सामाजिक प्रचार करने हेतु।

५. श्री अलख साहिबा की जीवनी और दर्शन का प्रचार करने के हेतु और उनके 'वाक्यों' का प्रचार-प्रसार एवं प्रकाशन करने के लिए।

ट्रस्ट की स्थापना के समय से ही उसे कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा क्योंकि वासकूरा में यज्ञशाला एवं धर्मशाला के निर्माण तथा श्रीनगर में धर्मशाला बनाने के लिए जमीन खरीदने आदि के लिए ट्रस्ट के पास धन का कोई प्रबन्ध नहीं था। लेकिन धन्य हैं वे देवी-भक्त जिन्होंने ट्रस्ट के सदाचार और उसकी आवश्यकता को देखकर तन, मन और धन से ट्रस्ट की समय-समय पर सहायता की। ट्रस्ट आज तक अपने उद्देश्यों और सिद्धान्तों को पूरा करने में जिस हद तक सफल हो सका है, वह सब देवी-भक्तों की सहायता से ही सम्भव हुआ है।

देवी रूपभवानी ने स्वयं कहा है :—

"बे-निशाँ आमद निशाने बेखुदाँ।[1]
सर बिनेह-बर आस्ताने बेखुदाँ॥"

(अलमस्त, बेखुद और ब्रह्मलीन लोगों की पहिचान यही है कि उनकी कोई पहिचान नहीं है। ऐसे लोगों की दहलीज पर सिर रख दो, अर्थात् सिजदा करो, क्योंकि वे पूज्य हैं।)

वे लोग जो निस्वार्थ भाव से समाज एवं धर्म की सेवा करते हैं, इसी प्रकार के पूज्य लोग होते हैं और ट्रस्ट उनके प्रति आभार प्रकट करता है। क्योंकि उन्होंने ट्रस्ट के कार्यों को सफल बनाया है।

यहाँ संक्षेप में ट्रस्ट के द्वारा सम्पन्न कार्यों का ब्योरा देना आवश्यक है।

महान उपलब्धियाँ :

१. वर्तमान मुख्य कार्यालय, दैदमर, दिद्दामठ, नवाकदल में जमीन का खरीदना और प्रतिवर्ष माघ, कृष्ण-पक्ष सप्तमी को यज्ञ का रचाना।

---

१. इस शेर को उनकी हस्तलिपि में लिखा हुआ पाया गया है, कुछ लोग ऐसा मानते हैं।

CC-0 S.P. Dhar Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ पर नदी के तट पर स्थापित मन्दिर का निर्माण और दो मंजिली धर्मशाला तथा एक बड़ी हवेली का निर्माण ; जिसमें किराये पर एक हाई स्कूल चलता है और वहाँ एक स्नानगृह भी है ।

२. श्रीभवानी के जन्म स्थान देंदमर (दिद्दामठ), नवाकदल, श्रीनगर में ज्येष्ठ पूर्णिमा को श्री अलख-साहिबा का जन्म दिन मनाया जाता है और यज्ञ रचाया जाता है । यहाँ पर जन्मस्थान से संलग्न जमीन का खरीदना और मन्दिर तथा अमृत-कुण्ड का निर्माण ट्रस्ट ने कराया । अन्य आवश्यक निर्माण कार्य चल रहे हैं ।

३. वासकूरा (सुम्बल), तहसील गान्धरबल में धर्मशाला का निर्माण । जिसका उद्घाटन १६ आश्विन वि० स० १९९९ को तत्कालीन गवर्नर स्व० महाराजकृष्ण धर ने किया था । उसकी दीवार बन्दी की । जन-कल्याण के लिए स्त्री-स्नानगृह तथा मन्दिर का निर्माण । उपवन में बिजली का प्रबन्ध, अमृतकुण्ड में पम्प लगाने आदि का कार्य ।

४. मणिगाँव अस्थापन (तहसील गान्धरबल) का जीर्णोद्धार तथा दीवार-बन्दी ।

५. चश्मा-साहिबी अस्थापन (तहसील श्रीनगर) में भगवती के तपस्या-स्थान का नव-निर्माण ।

६. अलक्ष्येश्वरी अस्थापन लार (तहसील गान्धरबल) का सुव्यवस्थित प्रबन्ध ।

७. खरीदे हुए बर्तनों और अन्यान्य आवश्यक वस्तुओं का सुव्यवस्थित संकलन एवं उनका निरीक्षण ।

८. सायं-पाठशाला का प्रबन्ध ।

९. दाह-कर्म-सामग्री-विभाग की स्थापना ।

१०. निम्नलिखित अस्थापनों का निर्माण एवं प्रबन्ध :—

वासुकि-कुण्ड (सुम्बल) का मन्दिर ।
मणिग्राम (वाइल) का मन्दिर ।
तकिया अलख-साहिबा (लार) ।
लक्ष्मी-भगवती रूपभवानी, चश्मा साहिबी ।
श्री रूपभवानी जन्म स्थान, (श्रीनगर) का मन्दिर ।
श्री रूपभवानी श्राद्ध-स्थल, (नवाकदल) श्रीनगर ।

श्रीअलक्षेश्वरी के वाक्यों का प्रथम प्रकाशन बड़ी कठिनाइयों के उपरान्त (कई पुरानी पाण्डुलिपियों की देख-रेख के बाद) स्व० हरभट्ट

CC-0 S.P. Dhar Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्री एवं स्व० डा० शिवनाथ शर्मा के सहयोग से किया गया था। इस बार ट्रस्ट भवानी अलक्ष्येश्वरी के वाक्यों का एक सुव्यवस्थित, प्रामाणिक एवं सटीक संस्करण जनता के सामने रख रहा है। प्रस्तुत संस्करण में पाण्डु-प्रति (Manuscript) पूर्ण रूप से शुद्ध की गई है। इस पवित्र कार्य का भार **डॉ० त्रिलोकी नाथ गंजू** (हिन्दीविभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय) ने लिया और उन्होंने अलक्ष्येश्वरी के वाक्यों के सम्पूर्ण अंगों का सविस्तार वर्णन तथा अनुवाद किया है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। इसका सम्पादन परमादरणीय **डॉ रमेशकुमार शर्मा** (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय) के सकुशल परीक्षण और निरीक्षण में हुआ है, यह निश्चय ही कश्मीरी हिन्दू-जनता के प्रति उनके द्वारा किया गया एक निःस्वार्थ कार्य है जो सदा के लिए स्मरणीय रहेगा और कश्मीरी जनता उनकी सदा आभारी रहेगी। हम **'प्रेम प्रिंटिंग प्रेस'** के स्वामी श्री पीतमसिंह यादव के भी आभारी हैं जिन्होंने कश्मीरी को देवनागरी में छापने के लिए विशेष चिह्नों की व्यवस्था की है।

उस अनन्त ब्रह्म की सत्ता का प्रकाश संसार के कण-कण में उद्भासित हो रहा है और जो सन्त उस अनन्त सत्ता से एक्य स्थापित कर लेते हैं उनकी आत्मा का प्रकाश भी संसार के कण-कण को प्रकाशित करता है। ब्रह्ममय देवी रूपभवानी की आत्मा कश्मीर के कण-कण में और कश्मीरी हिन्दुओं के रोम-रोम में आज भी मुखरित हो रही है। कहा जाता है कि उन्होंने अपने प्रिय शिष्य श्री बालजू धर को अपने एक पत्र में फारसी का एक शेर लिखकर भेजा था उसकी प्रथम पंक्ति है :—

"नूरे-मन बिंगर बहरजा जल्वागर।"

अर्थात् मेरे नूर को देखो, कि (वह) हर जगह जल्वागर (प्रकाशित) है।"

उसी अनन्त प्रकाश (नूर) की सेवा में यह ग्रन्थ तथा ट्रस्ट के सदस्यों की श्रद्धा-भावना एवं भक्ति अर्पित है।

दिनांक
माधवी ज्येष्ठ पूर्णिमा, २०३४
तदनुसार १ जून १९७७
(अलक्ष्येश्वरी देवी श्री रूपभवानी का जन्म-दिवस)

जानकीनाथ धर
मंत्री
श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (रजिस्टर्ड),
देदमर, नवाकदल, श्रीनगर,
कश्मीर, भारत।

CC-0 S.P. Dhar Collection. Digitized by eGangotri